सुखी राजकुमार

वंदना भारतीय

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

सुखी राजकुमार

वंदना भारतीय

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८३

संपादक :
मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :
मधु पोदले

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७ – नेताजी सुभाष रोड
बम्बई – ४०० ००२

मुद्रक :
जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद – ३८० ०१४

मूल्य :
दो रुपये

सुखी राजकुमार

जाड़े की एक ढलती शाम से थोड़ा पहले का वह समय था ।

सड़कें सूनी हो चुकी थीं । घरों के दरवाजे बंद हो चुके थे ।

उस खूबसूरत शहर के एक कोने पर एक बहुत ही बड़ा बाग था । दिनभर इस बाग में बच्चों की भीड़ जमा रहती थी। उनकी चीख-पुकार से सारा बगीचा गूंजता रहता था । शाम होने को होती तो बगीचे की भीड़ और भी ज्यादा बढ़ जाती, क्योंकि बच्चों के साथ-साथ, उनके माता-पिता

भी बगीचे में आ जाते। फूल-पौधों के बीच, हरी घास पर बैठकर वे अपनी दिनभर की थकान उतारते और बच्चे खेलते-कूदते।

जैसे-जैसे अंधेरा घिरने लगता, लोग अपने-अपने घरों को लौटने लगते और बगीचा अकेला, रात के सन्नाटे में डूब जाता।

आज भी बगीचे में ऐसा ही सन्नाटा था, लेकिन नहीं, आज एक खास बात थी। रंग-बिरंगे फूलों के बीच अबाबीलों का एक बड़ा-सा झुंड उतर आया था और वह चहचहा रहा था। इन्हें बहुत दूर जाना था। अपने अगले सफर पर जाने से पहले की तैयारी करती हुई सभी अबाबीलें अपने पंख, पूंछ फड़फड़ा रही थीं, चोंच से अपने परों की सफाई कर रही थीं।

अबाबीलों को ठंडा मौसम पसंद नहीं आता है। वे बर्फ गिरने से पहले एक देश से उड़कर दूसरे देश चली जाती हैं। गर्म देशों की खोज में इनकी लंबी-लंबी उड़ानें होती हैं।

इस झुंड में एक अबाबील ऐसी भी थी जो आगे जाने की तैयारियों से बेखबर, धरती और आकाश के रंग देख रही थी। इस नन्ही अबाबील ने दुनिया भर की यात्राएं की थीं। कोई जगह न बची थी जो इसने देखी न हो, और हर जगह इसने दुःख देखा था। नन्ही अबाबील की आंखों में आंसू आ जाते कि इतनी सुंदर दुनिया, इतने सारे दुःखों से क्यों भरी है!

बगीचे में बैठी-बैठी वह यही सोच रही थी कि अरे, यहां कोई दुःखी नहीं है!

वह बहुत खुश थी, क्योंकि इस शहर में उसने कोई उदास चेहरा नहीं देखा था। रंग-बिरंगे पेड़-पौधों और सुंदर झरनों के बीच बसे इस शहर में आदमी भी चिड़ियों की तरह खुश और फुर्तीले दिख रहे थे।

अबाबील का दिल खुशी से नाच उठा। उसकी इच्छा यहां से जाने की नहीं हो रही थी, "मैं यहीं-कहीं रह लूंगी," उसने सोचा, "दुनिया का दुःख देख-देखकर मैं थक गयी हूं।"

दूसरी अबाबीलों ने इसी वक्त पंख खोले और एक साथ उड़ गयीं।

नन्हीं अबाबील ने भी सबको जाता देख, उदास मन से अपने पंख खोले और सबके पीछे-पीछे उड़ चली ।

दूसरी अबाबीलों ने तेजी से पंख फैलाये, पर नन्ही अबाबील बस यूं ही उड़ रही थी । उड़ते हुए वह बराबर नीचे कूदते-फांदते बच्चों, काम से लौटते खुशमिजाज लोगों को देखती रही । उसके बाकी सभी साथी उड़ते-उड़ते बहुत आगे निकल गये, पर नन्ही अबाबील अपने खयाल में खोयी रही । जब नीचे सड़क पर बत्तियां जल उठीं तो नन्ही अबाबील को होश आया । वह एकदम अकेली छूट गयी थी । ठंड बढ़ गयी थी और हर तरफ अंधेरा छा रहा था ।

आगे बढ़ना संभव नहीं था ।

"अब तो मुझे रात यहीं बितानी होगी", अबाबील ने सोचा और गोल-गोल चक्कर लगाकर एक ऊंचे-से खंभे की चोटी पर उतर गयी ।

दरअसल वह खंभा नहीं था । शहर की सबसे ऊंची जगह पर, एक ऊंचे चबूतरे पर लगायी गयी वह एक राजकुमार की पत्थर की मूर्ति थी ।

इस राजकुमार ने नगर के लोगों की भलाई के लिए अनेक काम किये थे । हर दुःखी के आंसू पोंछे थे । दूसरों के सुख के लिए संघर्ष करता हुआ वह राजकुमार बहुत थोड़ी उम्र में मर गया था । उस भले राजकुमार की याद में शहर के लोगों ने राजकुमार की यह ऊंची, रत्नजड़ित प्रतिमा शहर के बीचों-बीच लगवायी थी ।

इस प्रतिमा में राजकुमार की आंखें नीलम की थीं । उसकी तलवार की मूठ पर सुंदर लाल जड़ा था और उसकी उंगली में हीरे की अंगूठी चमक रही थी । और इन सबसे अद्‌भुत थी राजकुमार के होठों पर बसनेवाली मुस्कान और उसकी शांत आंखें !

नगर के लोगों का विश्वास था कि जब तक राजकुमार की यह प्रतिमा यहां लगी रहेगी, नगर में कोई दुःखी नहीं होगा ।

उस मुस्काते होठोंवाले राजकुमार को सभी सुखी राजकुमार कहते थे ।

नन्हीं अबाबील सुखी राजकुमार की मूर्ति के ऊपर-नीचे कुछ देर तक फुदकती रही और अंत में मूर्ति के ओवरकोट

के कालर में उसे वह गर्म जगह मिल गयी, जिसमें वह आराम से रात गुजार सकती थी। उसने उसमें दुबककर आंखें बंद कर लीं। बेचारी बहुत थक गयी थी।

रात गहरी होती गयी। ठंड बढ़ती जा रही थी।

शहर में कहीं बारह का घंटा बजा। आराम से सोयी अबाबील जाग गयी।

"बारिश हो रही है क्या? पानी की यह बूंद कहां से पड़ी?" उसने सोचा और अपना पंख झाड़कर फिर सोने की तैयारी कर रही थी कि टप से पानी की एक और बूंद उस पर गिरी।

इस बार उसे साफ लगा कि जाड़े की रात में भी पानी की वह बूंद गर्म थी।

"कौन रो रहा है भला!" अबाबील कोट के कालर से बाहर निकली।

गहरे अंधेरे में सारा नगर सो रहा था। कहीं कोई भी तो नहीं था। अचानक अबाबील ने देखा सुखी राजकुमार की आंखों से आंसू बह रहे हैं।

"क्यों रो रहे हो राजकुमार ?" वह उड़ कर उसके चेहरे तक पहुंची।

"क्या करूं ? इस नगर में लोग इतने दुःखी हैं और मैं बेबस खड़ा हूं।"

"कौन दुःखी है ? इस नगर में मुझे तो कोई दुःखी नहीं दिखा।"

"नहीं, मेरी नन्ही अबाबील ! मैं इस ऊंचाई से सबकुछ देख पाता हूं। जरा ध्यान से सुनो। जब सब सुखी लोग सो जाते हैं, तो दुःख में डूबी ये किसकी सिसकियां सुनायी पड़ती हैं ? लोगों ने मेरे पांव तो पत्थर में जड़ दिये हैं। मैं चल नहीं सकता, पर मेरी आंखें सब देखती हैं।

"मेरी नन्ही दोस्त, आज तक किसी ने मेरे आंसुओं को नहीं देखा। सब मुझे एक मुर्दा मूर्ति ही तो समझते हैं। तुमने पहली बार मुझसे बात की है। क्या तुम एक काम करोगी ? इन बेचारे गरीब, बेसहारा, दुःखी लोगों को मदद पहुंचाने में मेरा हाथ बंटाओगी ?"

अबाबील अवाक होकर मूर्ति को रोते-बोलते देखती रही।

उसे अब इस सुखी राजकुमार में दिलचस्पी होने लगी थी, जिसका दिल इतने दुःखों में डूबा था।

"मैं... मैं भला क्या कर सकती हूं ?" उसने पूछा।

"तुम बहुत कुछ कर सकती हो मेरी दोस्त ! वो देखो, दूर, गरीबों की बस्ती में, मां और बेटे का एक छोटा परिवार है। उनके घर में दरवाजा नहीं है। टाट का एक पर्दा भर लटक रहा है। ठंडी हवा जब-तब कमरे में घुस जाती है। मां खीजकर सो गयी है। उनकी ओढ़ने की चादर भी फटी हुई है। मां फटी चादर का आधा हिस्सा खुद ओढ़े है और आधा उसने लड़के पर डाल दिया है।

"लड़का सो नहीं रहा है। देखो, उसकी आंखों से आंसू बह रहे हैं। जानती हो, इस बेचारे के पास पढ़ने को किताबें नहीं हैं, कापियां, पेन्सिल कुछ भी नहीं है। शाम से ही वह अपनी मां से जिद कर रहा है कि उसे यह सब खरीद दिया जाये और अब रोते-रोते सोने की कोशिश कर रहा है। बेचारी मां के पास खाने तक को पैसे नहीं हैं। उसकी किताबों के लिए

कहां से लायेगी वह रुपये? नन्ही चिड़िया, जाओ, उसकी मदद करो।"

"पर कैसे?" अबाबील चहकी।

"यह तो बहुत आसान है। तुम मेरी उंगली की अंगूठी से हीरा नोच लो और जाकर उस लड़के के घर में गिरा दो," राजकुमार ने बड़े प्यार से कहा।

"नहीं, नहीं राजकुमार, यह मुझसे नहीं होगा," अबाबील ने विरोध किया।

"अबाबील, अगर तुम मुझे हंसते देखना चाहती हो तो तुम्हें मेरी यह बात माननी ही होगी।"

अबाबील कुछ देरतक हिचकती रही, फिर उसने राजकुमार की अंगूठी से हीरा नोच लिया और उस घर की तरफ उड़ चली।

घर की ठंडी फर्श पर, फटी गुदड़ी बिछा कर, फटी चादर ओढ़े मां-बेटे लेटे थे।

मां सो गयी थी, पर लड़का अब तक रोता हुआ अपनी वह कापी उलट-पलट

रहा था जिसमें कोई पन्ना खाली नहीं रह गया था।

अबाबील कुछ देर टाट के पर्दे पर बैठी रही, और फिर उसने चमकदार हीरा घर के अंदर गिरा दिया।

लड़के ने लपककर उसे उठाया और खुशी से नाच उठा।

घने कोहरेवाली रात में लंबा सफर तय कर जब अबाबील लौटी, तो उसके दोनों पंख भींग गये थे। लेकिन वह खुश थी कि उसने आज भलाई का एक काम किया।

"सुखी राजकुमार, अब तो तुम रोना बंद करो। उस लड़के ने हीरा पा लिया है। कल उसे सारी जरूरी चीजें मिल जायेंगी," ठंड से सिकुड़ती हुई अबाबील बोली।

लेकिन राजकुमार की आंखों से आंसू बह ही रहे थे।

"अब क्यों रो रहे हो सुखी राजकुमार?"

"मेरी नन्ही दोस्त, अब भी बहुत से बच्चे दुःखी और उदास हैं। वह देखो, उस दूरवाले घर में कुछ बच्चे एक बीमार आदमी को घेर कर बैठे हैं। यह ठंडी और लंबी रात वे आंखों ही आंखों में काट देंगे। पर उससे उन्हें क्या मिलेगा?

"यह बीमार आदमी इन बच्चों का पिता है। मजदूरी करके, बड़ी मुश्किल से इनका पेट पालता है। पिछले दस दिनों से यह बीमार है। दवा के बगैर इसकी हालत बिगड़ती जा रही है। बेचारे छोटे बच्चे रोने के सिवा और कर भी क्या सकते हैं? ओ भली चिड़िया, एक बार फिर अपने डैनों में ताकत भरो और उनकी सहायता करो", राजकुमार की आवाज़ करुणा से भरी थी।

"मगर कैसे? अब उन्हें क्या दिया जा सकता है?"

"क्यों, देने को तो मेरे शरीर पर जो भी बेशकीमती पत्थर हैं, वह सारे दुःखी लोगों की मदद के लिए तुम नोच सकती हो।"

"नहीं, सुखी राजकुमार, नहीं!!" नन्ही अबाबील ने अपनी पूरी ताकत से राजकुमार का विरोध किया।

राजकुमार अपनी बात पर अड़ा रहा, "इन दुःखी लोगों की मदद

करने के लिए जो भी करना पड़े, करो अबाबील ! ”

अबाबील ने राजकुमार से हार मान ली और उसकी तलवार की मूठ में लगा लाल नोच लिया ।

एक बार फिर उसने जाड़े की रात को पार करने के लिए पंख फैलाये और अंधकार में विलीन हो गयी । वह बीमार आदमी की झोंपड़ी तक गयी । छोटे-छोटे बच्चे उदास बैठे थे । बीमार की हालत बहुत बुरी थी ।

अबाबील ने चहचहाकर उनका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया और अपनी चोंच से लाल कमरे में गिरा दिया ।

एक लड़के ने दौड़कर वह लाल उठा लिया और खुशी से उछलने लगा । सबकी आंखें खुशी से चमकने लगीं । बस, आज की रात और कल उनके पास बहुत सारे रुपये होंगे । उन रुपयों से उनका पिता फिर चंगा हो जायेगा ।

इस बार लौटती हुई अबाबील को बहुत ठंड लगी । गिरती हुई ओस से रात एकदम गीली हो गयी थी

और ऐसे में सरसराकर बहती हवा कलेजा चीर रही थी। एक बार तो अबाबील को लगा कि वह उड़ नहीं सकेगी।

किसी तरह वह मूर्ति तक पहुंची।

"सुखी राजकुमार, अब तुम आंखें बंद कर सो जाओ। अब कोई दुःखी नहीं है।"

"नहीं, मेरी दोस्त, नहीं। अब भी लोग दुःखी हैं। इस ठंडी रात में भी बहुत सारे बच्चों की आंखें आंसुओं से गीली हैं। जब तक मैं उन रोते बच्चों को देख सकता हूं, मेरे आंसू कैसे सूखेंगे?"

"अब कौन रो रहा है राजकुमार?" अबाबील ने ठंड से कांपती आवाज में पूछा।

"जरा मेरे पास आकर देखो। दूर नदी के किनारे जो घर बना है, उसके दरवाजे पर एक लड़की घुटनों में सर दिए, ठंड से सिकुड़ी बैठी है। पिछले पंद्रह दिनों से वह इस घर में नौकरानी का काम करती है। उसकी गरीब मां ने मजबूरी से उसे यहां काम पर लगाया है।

"घर का काम करते हुए आज उससे कांच के कुछ बरतन टूट गये हैं। उसकी इस छोटी-सी गलती की सजा उसे मिली है। मालकिन ने दरवाजा अंदर से बंदकर उसे भयानक ठंड में बाहर छोड़ दिया है।

"मेरी प्यारी अबाबील, जाओ, उसकी मदद करो, ताकि उसे मजबूरन ऐसी क्रूर मालकिन के पास न रहना पड़े।"

ठंड ने अबाबील की हिम्मत तोड़ दी थी। उसे लग रहा था कि उसका खून जम जायेगा।

बड़ी थकी आवाज में उसने पूछा, "पर अब तुम उसे क्या दोगे, राजकुमार?"

"क्यों, मेरी नीलम की ये आंखें ! ये किस काम आयेंगी ?"

"नहीं, नहीं ! ! " अबाबील रो पड़ी, " मैं तुम्हारी आंखें नहीं निकाल सकती ।"

"मैं पत्थर की एक मूरत, भला आंखें रखकर क्या करूंगा ?", राजकुमार ने प्यार से पूछा ।

राजकुमार के हठ के आगे उसकी एक न चली और उसने राजकुमार की नीलम की एक आंख नोच ली ।

दर्द से राजकुमार ने हल्की आह भरी, पर अपना दर्द जाहिर न होने दिया ।

अबाबील ने अपना दिल मजबूत किया, पंखों की ताकत समेटी और नीलम लेकर उस लड़की के पास पहुंची । रोती हुई लड़की की गोद में उसने नीलम गिरा दिया और वापस लौट पड़ी ।

ठंड से कांपती वह राजकुमार के कोट के कालर में घुस गयी। वह

अब सिर्फ सोना चाहती थी, लेकिन जल्दी ही उसे बाहर निकलना पड़ा। राजकुमार अभी भी रो रहा था।

"क्या हुआ सुखी राजकुमार, तुम अब भी क्यों रो रहे हो?"

"मेरी नन्ही फरिश्ता, मैं अभी एक दुःखद बात देख रहा हूं। काश, मैं इस तरह पत्थरों में न जकड़ा गया होता तो जाकर उसकी मदद करता।

"देखो, दूर एक औरत अपने नवजात शिशु को सीढ़ियों पर छोड़ कर वापस भागना चाह रही है। मां की ममता बार-बार उसका आंचल खींच रही है, लेकिन वह करे क्या! उसे एक बच्चा पहले से है। इस दूसरे बच्चे को वह क्या खिलायेगी? क्या पहनायेगी? मजबूर होकर वह अपने नन्हे से शिशु को किसी के दरवाजे फेंकने आयी है। उसने दरवाजे पर अपना बच्चा रख भी दिया है, लेकिन खड़ी-खड़ी रो रही है। जाओ अबा-बील, और इस औरत को उसकी

शांति, उस बच्चे को उसकी मां वापस दे दो।"

"लेकिन राजकुमार, तुम्हारे पास सिवा इस एक आंख के और बचा ही क्या है?"

"यही ले जाओ!"

अबाबील फूट-फूटकर रोने लगी।

राजकुमार की करुणा ने इस बार भी उसे मजबूर कर दिया, "मेरी दोस्त, आंखें इसलिए ही तो हैं न कि हम दूसरों का दुःख देख सकें और उसे दूर कर सकें। मेरी आंखों की कीमत उस बच्चे की जिंदगी से ज्यादा तो नहीं है?"

जी कड़ा करके अबाबील ने राजकुमार की दूसरी आंख भी निकाल ली।

"जल्दी जाओ", अपने दर्द को दबाते हुए सुखी राजकुमार ने कहा,

"सुबह होने ही वाली है और मैं सुबह होने से पहले ही फिर पत्थर का हो जाऊंगा।"

अबाबील ने अपनी बची सारी ताकत समेटकर उड़ान भरी।

जल्दी ही वह उस ऊंचे मकान की सीढ़ियों तक पहुंच गयी, जहां नवजात बच्चे को गोद से सटाकर वह अभागी मां रो रही थी।

गोल-गोल चक्कर काटती अबाबील ने जगह देखकर नीलम गिरा दिया।

औरत की नजर उस पर पड़ी। उसने एक नजर में ही उसे पहचान लिया।

लपककर उसने नीलम उठाया और फिर बच्चे को छाती से भींसकर चूमने लगी और चूमती ही गयी।

अबाबील का काम पूरा हो गया था। सारी रात के इस लंबे सफर ने उस नन्ही-सी जान को ठंड और थकान

से चूर-चूर कर दिया था। उसकी आंखें मुंदने लगी थीं।

बड़ी मुश्किल से उसने अपनी बची-खुची ताकत समेटी और वापस राजकुमार तक उड़ चली।

"काम पूरा हो गया", उसने थकी आवाज में राजकुमार से कहा।

राजकुमार ने कोई जवाब नहीं दिया। वह पत्थर बन चुका था।

सुबह नगर की आधी से ज्यादा आबादी मूर्ति के पास इकट्ठा थी।

"सारे जवाहरात रातोंरात कैसे चोरी चले गये?" एक आवाज आयी।

"जवाहरात भले ही चोरी चले गये हों, पर राजकुमार की मुस्कान कितनी अद्भुत लग रही है!" किसी ने कहा।

"अरे, यह देखो!" भीड़ में से कोई चिल्लाया और झुककर राजकुमार के पांवों के पास से कुछ उठाया।

सबने देखा, ठंड से ठिठुरकर मरी हुई वह एक अबाबील थी! ●

(एक अंग्रेजी कहानी पर आधारित)

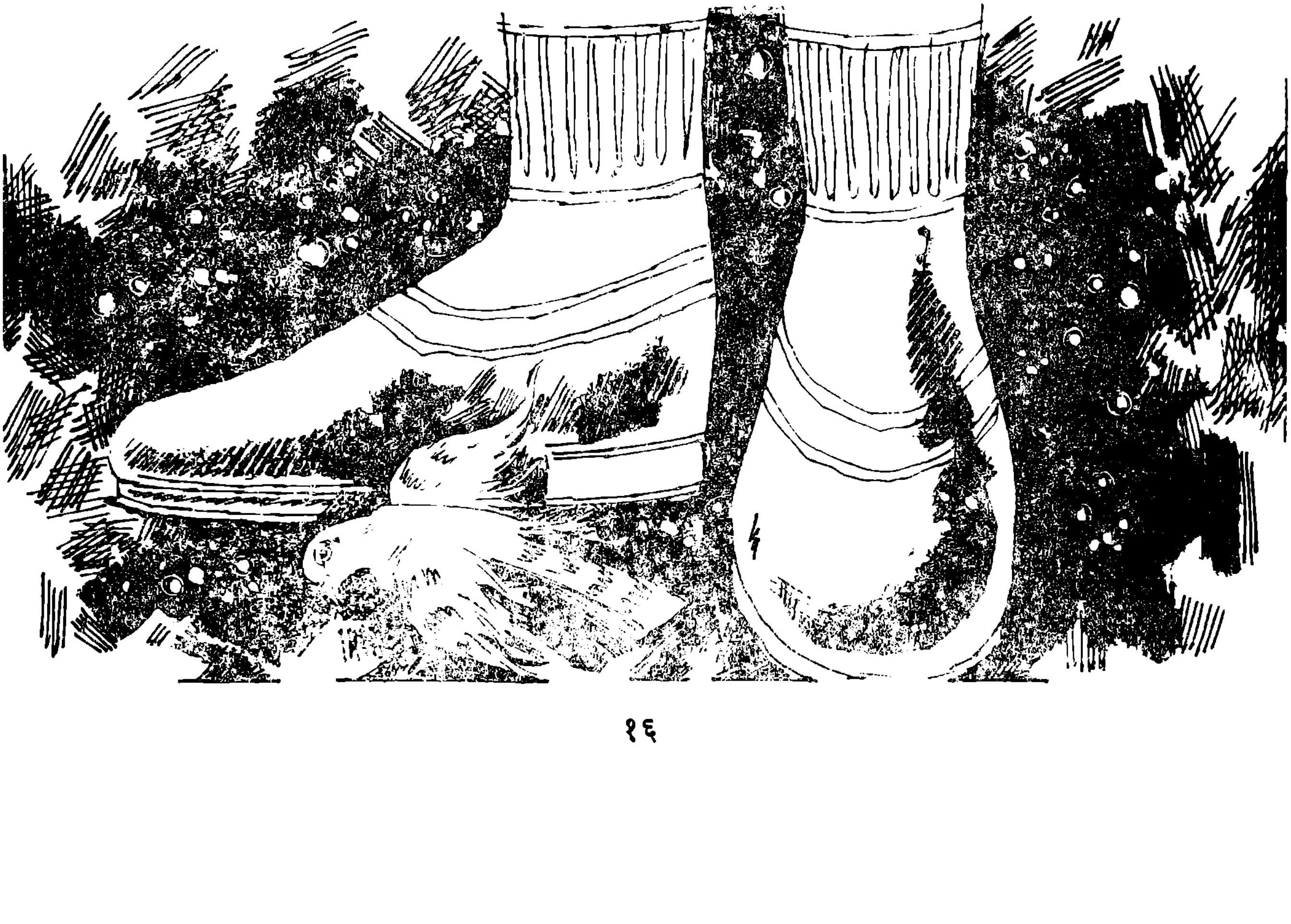

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **चौथी** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

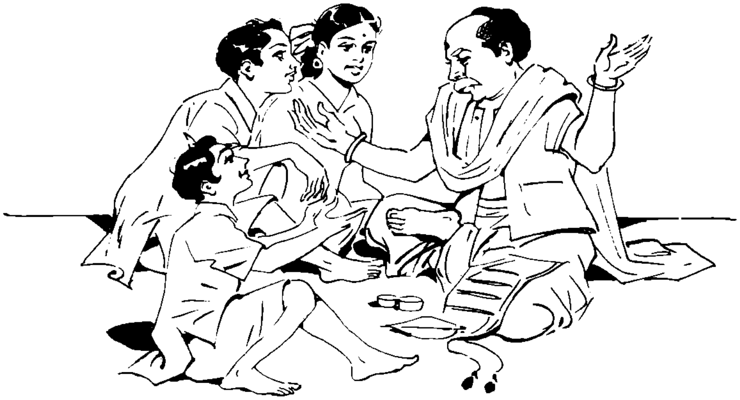

हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां
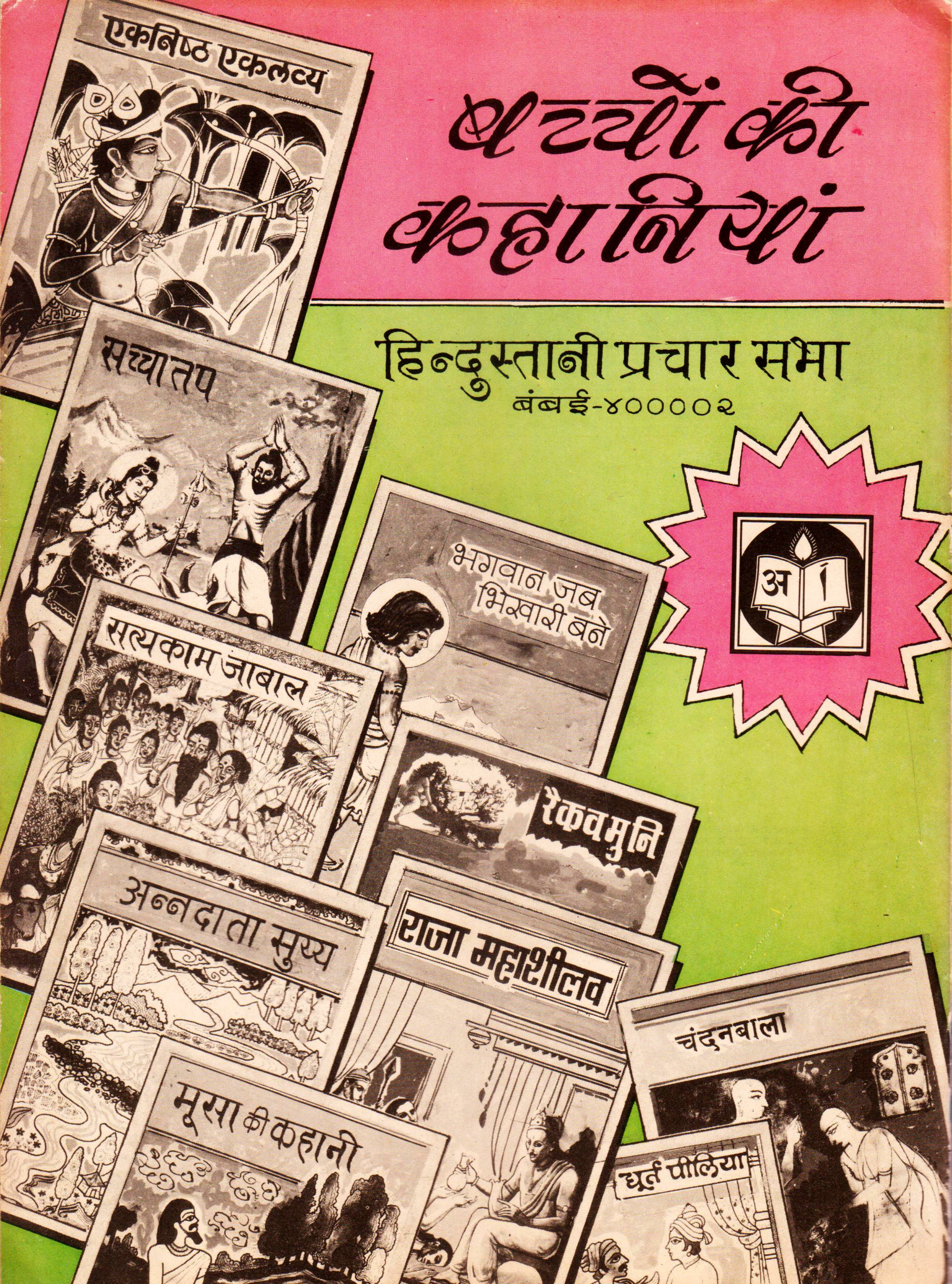
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२